ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 13 अंक - 09 अगस्त - I, 2012 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.50 रु.

आध्यात्मिकता के बिना समाज का विकास संभव नहीं

दिल्ली। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मुख्यमंत्री शीला दीक्षित, दादी हृदयमोहिनी, ब्र.कु.शिवानी, ब्र.कु.बृजमोहन, ब्र.कु.शांति तथा अन्य।

दिल्ली। नैतिकता, आध्यात्मिकता और मानवीय मूल्यों के बिना हम वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र में विकास नहीं कर सकते हैं। क्योंकि आज मानव के मन में भविष्य को लेकर असुरक्षा का माहौल बना हुआ है। इसलिए आज समाज में आध्यात्मिक क्रांति की आवश्यकता है तभी हम हर क्षेत्र में विकास कर स्वच्छ समाज का निर्माण कर सकते हैं।

उक्त उद्गार दिल्ली की मुख्यमंत्री शिला दीक्षित सिरीफोर्ट ऑडीटोरियम में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित ''समय की पुकार, परमात्म शक्तियों से स्वर्णिम संसार'' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि गलत जीवनशैली और संस्कृति अपनाने के कारण आज मानव भौतिकता की ओर दौड़ा चला जा रहा है, और अपना जीवन तनाव व दु:खों से भर लिया है। जबकि आध्यात्मिकता हमें सिखाती है कि भौतिक साधनों के बिना भी हम सुखमय जीवन जी सकते हैं और जीवन की सभी समस्याओं का समाधान भी आध्यात्मिकता के माध्यम से कर सकते हैं। इसके लिए हमें सिर्फ अवेयर होने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ समाज के लोगों का जीवन स्तर ऊंचा उठाने और उनका चारित्रिक विकास करने का जो कार्य कर रही है वह सराहनीय है। जिस प्रकार से अच्छा मकान बनाने के लिए हमें अनेक चीजों

दादी जी से आध्यात्मिक चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री शीला दीक्षित

की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मनुष्य का चरित्र स्वच्छ बनाने के लिए अनेक दिव्य गुणों की आवश्यकता होती है। अध्यात्म के मार्ग पर चलकर ही व्यक्ति अपना व दूसरों का जीवन श्रेष्ठ बना सकता है। समाज में फैली कुरीतियां व अंधविश्वास को भी आध्यात्मिकता के माध्यम से दूर किया जा सकता है।

संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा सम्बोधित करते हुए कहा कि आज समय की पुकार है कि स्वयं को परमात्मा के साथ जोड़े और उनसे शक्ति लेकर उसका उपयोग समाज के कल्याण में करे। तो स्वयं का कल्याण स्वत: ही हो जायेगा। और हमारा जीवन सुख, शांति और खुशी से भरपूर हो जायेगा। दादी जी ने कहा कि वर्तमान समय अपना जीवन हीरे समान मूल्यवान बनाने का है। इसलिए अपना समय व्यर्थ नहीं गंवाये।

संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि स्वयं को भूलने के कारण ही व्यक्ति दु:खी व अशांत हो गया है। आज समय पुन: उसे आवाज दे रहा है कि स्वयं को व परमात्मा को पहचानों। उन्होंने कहा कि राजयोग मेडिटेशन का नियमित अभ्यास करने से हम अपना जीवन दिव्य गुणों से सम्पन्न बना सकते हैं। जो कि आने वाली स्वर्णिम दुनिया का आधार भी है।

राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.शिवानी ने अपनी शुभभावना व्यक्त करते हुए कहा कि यदि हम अपने विचारों को सकारात्मक व सृजनशील बनायेंगे तो असंभव कार्य भी सहज ही संपन्न हो जायेंगे।

इसके पश्चात् डायलॉग का भी शेष भाग पृष्ठ 4 पर

दिल्ली। सिरीफोर्ट स्टेडियम में ध्यानपूर्वक सुनते हुए शहर के विशिष्ट अतिथि एवं जनसमूह।

रक्षाबंधन पर संदेश

रक्षाबंधन नकारात्मक भावनाओं से आत्मा की रक्षा के लिए बांधा गया पावन एवं अलौकिक प्रेम का पवित्र बंधन है। ऐसा श्रेष्ठ भाव हृदय की समस्त भावनाओं को परिष्कृत कर देता है। रक्षाबंधन सिर्फ कलाई पर बांधा जाने वाला धागा नहीं है। उसका अर्थ है, मन में पवित्र भावना, निष्काम भावना और तदनुकूल दृष्टि तथा व्यवहार। परमात्मा द्वारा किए जा रहे विश्व परिवर्तन के दिव्य कार्य से पूरे विश्व को अवगत कराना भी इस शुभ अवसर का उद्देश्य है। हरेक के दिल में परमात्म प्रत्यक्षता का झंडा लहराना है। यह अमूल्य समय अलबेलेपन व आलस्य में व्यर्थ गंवाने का नहीं है। हर परिस्थिति में हमें शांत स्वरूप रह सभी को शांति का दान देना है। सभी के साथ मधुरता पूर्ण व्यवहार करने और अपनी भावनाएं बहुत शुभ और श्रेष्ठ रखते हुए ईश्वरीय कार्य करने का संकल्प लें। परमात्मा इस धरा पर आकर सर्व आत्माओं को सुख, शांति व समृद्धि का वर्सा का दे रहे हैं। यह संदेश विश्व की हर आत्माओं तक पहुंचाना है। यह समय ''वसुधैव कुटूम्बकम'' की परिकल्पना को साकार कर रक्षाबंधन का उत्सव मनाना है।

सभी प्यारे आत्मिक भाई-बहनों को रक्षाबंधन के शुभ पर्व पर कोटि-कोटि बधाई हो।

मुख्य प्रशासिका , दादी जानकी

न्याय के लिए मूल्यों का सम्मान जरूरी

ज्ञानसरोवर। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति ए.के.पटनायक, डॉ.पी.श्रीदेवी, एम.एन.मौर्या, ब्र.कु.शीलू, डॉ.रश्मि ओझा, ब्र.कु.रमेश शाह तथा अन्य।

ज्ञानसरोवर। सर्वमान्य एवं सत्य आधारित न्याय के लिए मानवीय मन में मूल्यों के प्रति आस्था व सम्मान होना चाहिए। उक्त विचार भारत के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति ए.के.पटनायक ने ब्रह्माकुमारीज़ के न्यायविद् प्रभाग द्वारा आयोजित चार दिवसीय सम्मेलन में देशभर से आये हुए न्यायिक अधिकारियों, न्यायविदों व न्यायिक सेवाओं से जुड़े लोगों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि न्यायिक प्रक्रिया के दौरान न्यायिक अधिकारियों की निर्णयात्मक भूमिका में अध्यात्मिक मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। क्योंकि अध्यात्म बुद्धि की निर्णय शक्ति में वृद्धि करता है। इसलिए न्यायिक अधिकारियों को आध्यात्मिक मूल्यों को समझने की आवश्यकता है।

न्यायविद प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु.रमेश शाह ने कहा कि सतोगुणी व्यक्तित्व धारण करने तथा निर्णय शक्ति को बढ़ाने के लिए जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाने की आवश्यकता है।

विशाखापट्टनम लॉ कॉलेज के प्रींसिपल डॉ.पी.श्रीदेवी ने कहा कि मानवीय मूल्यों की गिरावट से मनुष्य का नैतिक व चारित्रिक पतन हो रहा है।

शेष पृष्ठ 5 पर